विकास दास © ए.पी. इन्स्ट्रैक्ट्स पी.

बचपन से ही तराशो

ए. वेंकट नारायण

दिल्ली लॉन टेनिस एसोसिएशन के मैदान पर 3 दिसंबर 2005 को हजारों उत्सुक टेनिस प्रेमी, बच्चे और उनके माता-पिता मौजूद थे। ये लोग भारतीय टेनिस की नई सूरत से रूबरू होने आए थे जिसमें अब युवा महिला सितारों का बोलबाला है। यहां डेविस कप या फैडरेशन कप का मैच नहीं हो रहा था, बल्कि टेनिस प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया था जिसका संचालन भारतीय टेनिस में सनसनी मचाने वाली सानिया मिर्जा, भारतीय-अमेरिकी टेनिस खिलाड़ी शिखा ओबेरॉय, डबल ग्रांड स्लैम के सितारे महेश भूपति और पूर्व विबंलडन चैंपियन नीदरलैंड के रिचर्ड क्रॉजिसेक कर रहे थे।

सैकड़ों बच्चों के लिए यह टेनिस की कुछ मूल बातों और तकनीकी दक्षता को सीखने और अपने चहेते खिलाड़ियों से बातचीत करने का दुलर्भ मौका था। तीन साल से टेनिस खेल रही नौ वर्षीय सिमरन कौर सेठी कहती हैं, ''मैं इस अवसर का लाभ उठाना चाहती थी और सानिया से कुछ खास फॉरहैंड शॉट सीखना चाहती थी।'' सिमरन अपनी खुशी छिपा नहीं पा रही थी। उसका कहना था, ''मैं सानिया से दिल्ली में पहले भी मिली थी लेकिन उसके साथ खेलने का मौका नहीं मिला। अब मैं रोमांचित हूं क्योंकि मुझे सानिया के साथ बॉल रैली करने का मौका मिला।''

शिखा कहती हैं, ''हर महान चैंपियन अपने शुरुआती सालों में किसी न किसी टेनिस प्रशिक्षण शिविर में इस प्रक्रिया से गुजरता है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि लोगों में बड़े पैमाने पर रोमांच और दिलचस्पी जगाने वाली सानिया इसका हिस्सा हैं। वह कहती हैं, ''सानिया और मैंने पिछले साल इस तरह के कई टेनिस प्रशिक्षण शिविरों में भागीदारी की और यह बात देखने को मिली कि ज्यादातर में लड़कों से ज्यादा संख्या लड़कियों की थीं। लड़कियों में टेनिस खेलने की दिलचस्पी जगी है और उनमें से बहुत-सी लड़कियां प्रतियोगिताओं में खेलना चाहती हैं। यदि मैं इन प्रशिक्षण शिविरों में कुछ बच्चों को प्रोत्साहित कर पाऊं और उनकी मदद कर सकूं तो मुझे संतुष्टि का अनुभव होगा।''

पिछले साल से पहले तक भारतीय टेनिस परिदृश्य महिलाओं के तेवरों से अनजान था। लेकिन अब पूरा देश अचानक दुनिया में टेनिस की बड़ी ताकत बनने के सपने देख रहा है। सानिया और ओबेरॉय बहनों (शिखा, 22 और नेहा, 19) ने विश्व चैंपियनशिप और ग्रांडस्लैम प्रतियोगिताओं में अच्छी प्रतिस्पर्धा दिखाई। शिखा और नेहा को अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में साधारण सफलता ही मिली लेकिन अमेरिका में जूनियर स्तर पर उनका प्रदर्शन शानदार रहा।

शिखा का जन्म दुबई में हुआ और बाद में उनका परिवार अमेरिका चला गया जहां नेहा का जन्म हुआ। शिखा पिछले साल भारतीय फैडरेशन कप की टीम में शामिल हुई और टीम के एशिया-ओसिएनिया जोन में दूसरे स्थान पर रहने में मदद की। नेहा भी पीछे नहीं है और मौका मिलने पर फैडरेशन कप में भारत की ओर से खेलने की उम्मीद लगाए हुए है। दोनों बहनें कई प्रतियोगिताओं में डबल्स में जोड़ीदार रही हैं। उन्होंने कोलकाता में सितंबर में सनफीस्ट ओपन 2005 अंतर्राष्ट्रीय महिला प्रतियोगिता में अपनी संघर्ष शक्ति का परिचय दिया और फाइनल तक पहुंची।

शिखा ने टेनिस खेलना छह साल की उम्र में शुरू किया। उनके अनुसार भारत में टेनिस प्रतिभाएं तो बहुत हैं लेकिन अवसरों की कमी है। वह कहती हैं, ''अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सफल होने के लिए हमें बहुत-

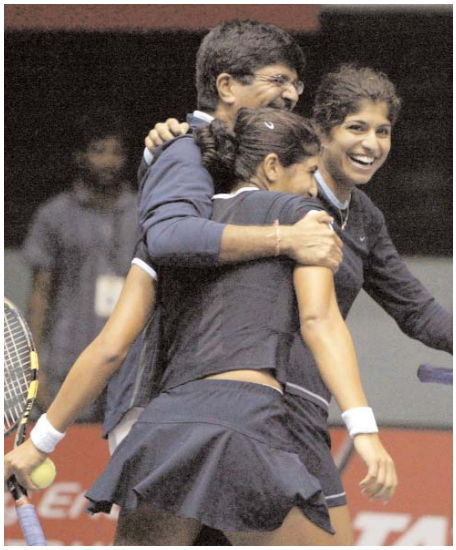

विपिन साहनी © पी.पी. डब्ल्यू.डब्ल्यू.

बाएं: सितंबर 2005 में कोलकाता में सनफीस्ट डब्ल्यूटीए ओपन के सिंगल्स क्वार्टर फाइनल मैच में रूस की अनास्तासिया मिस्किना के विरुद्ध खेलतीं शिखा ओबेरॉय। मिस्किना 6-4, 6-2 से जीतीं।

दाएं: नेहा (बाएं) और उनकी बहन शिखा कोलकाता में सनफीस्ट प्रतियोगिता के डबल्स के सेमीफाइनल में जीत के बाद खुशी से अपने पिता से लिपटते हुए। ओबेरॉय बहनों ने हंगरी की मेलिंडा जिंक और उक्राइन की युलिना फेडक को 7-6, 1-6, 6-3 से हराया।

सी चीजें करनी होंगीं जैसे कि प्रतिभावान टेनिस खिलाड़ियों को युवावस्था में ही स्कूल स्तर पर पहचाना जाए। दुर्भाग्यवश भारत में बहुत-से माता-पिता अपनी बेटियों को खेलों में भाग लेने को प्रोत्साहित नहीं करते। घरों में खेलों को अब भी सहज तरीके से नहीं लिया जाता, हालांकि कुछ अपवाद हो सकते हैं। ज्यादा लोकप्रिय बनाने के लिए खेलों को स्कूल स्तर पर पाठ्यक्रम के रूप में शामिल करने की जरूरत है। खेलों के लिए मूलभूत सुविधाएं विकसित करने के लिए स्कूलों और सरकार, दोनों को मिलकर काम करना होगा और बच्चों को शुरुआत से ही प्रतिस्पर्धी होने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।''

टेनिस खेलने के पहले शिखा ने अन्य खेलों में भी हाथ आजमाया। शिखा कहती हैं, ''मेरे पिता सिर्फ मनोरंजन के लिए खेलते थे और वही मेरे पहले प्रशिक्षक थे। वहीं से शुरुआत हुई। बाद मैं जब मैं 12 साल की थी तो मैंने न्यू जर्सी में एक प्रोफेशनल टेनिस अकादमी में प्रवेश ले लिया। जब मैं 18 साल की थी तो हमारा परिवार फ्लोरिडा चला गया। वहां मैंने तांपा की विश्व प्रसिद्ध हैरी हॉपमैन टेनिस अकादमी में प्रशिक्षण लिया। मैं गहन प्रशिक्षण और कड़े शारीरिक फिटनेस कार्यक्रम के बूते स्कूल स्तर पर बहुत-सी प्रतियोगिताओं में खेल सकी।'' वह जूनियर स्तर पर फ्लोरिडा में शीर्ष महिला खिलाड़ी बन गई और अमेरिका की शीर्ष पांच जूनियर खिलाड़ियों में शामिल हो गईं।

ओबेरॉय बहनों को अमेरिका की महिला टेनिस नेत्रियां वीनस और सेरेना विलियम्स से प्रेरणा मिलती है। विलियम बहनें फ्लोरिडा में ही पचास किलोमीटर दूर रहती हैं। शिखा विलियम बहनों की प्रतिस्पर्धी क्षमता की प्रशंसा करती हैं।

शिखा के अनुसार, अमेरिका में खेलों की प्रगति इसलिए हो पाई क्योंकि प्रत्येक हाईस्कूल या मिडिल स्कूल में लड़के और लड़कियों की फुटबाल, बॉस्केटबॉल या टेनिस की टीमें हैं। खिलाड़ियों के ज्यादा संख्या में होने से प्रतियोगिताओं में प्रतिस्पर्धा कड़ी होती थी। इससे हमें अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में खेलने के लिए मजबूत बनने में मदद मिली। अमेरिका में स्पांशरशिप परिदृश्य भी बहुत अच्छा है और जीतने का सिलसिला बनने पर बहुत-से खिलाड़ियों को इसका लाभ मिलता है।

अमेरिकी टेनिस एसोसिएशन पूरे देश में सालभर प्रतियोगिताएं आयोजित करती हैं। शिखा के अनुसार, ''अमेरिका और भारत में खेलों के प्रति नजरिये को लेकर बड़ा अंतर यह है कि अमेरिका में खेलों को निचले स्तर से ही बढ़ावा दिया जाता है। राष्ट्रीय फैडरेशन सिर्फ प्रतियोगिताएं आयोजित करती हैं और शीर्ष प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करती हैं। लेकिन असली बढ़ावा स्थानीय स्तर पर मिलना चाहिए।'' उनका मानना है कि परिवार, स्कूल और समाज के नजरिये के मद्देनजर लड़कियों के लिहाज से अमेरिका के मुकाबले भारत में चुनौतियां ज्यादा हैं।

शिखा कहती हैं, ''भारत में महिला टेनिस में पिछले सालों में ज्यादा गहराई आई है। हमें युवा खिलाड़ियों को प्रेरित करने की जरूरत है। वहां से शुरू करने की जरूरत है जहां से लिएंडर पेस और महेश भूपति छोड़कर गए। उनके अनुसार पूरी स्कूल प्रणाली किताबी पढ़ाई के इर्दगिर्द सिमटी होती है। इसमें आपको खेलों या संगीत में रचनात्मक दिमाग विकसित करने का मौका नहीं मिल पाता। मेरे विचार से यह सबसे गलत चीज हो रही है, इससे बच्चों पर दबाव बढ़ता है और उन्हें नुकसान पहुंचता है।''

शिखा के अनुसार, ''यदि लड़कियां लक्ष्य निर्धारित करें तो वे टेनिस में अपनी ताकत का अहसास करा सकती हैं। लक्ष्य का होना बहुत अहम है। इसके साथ ही आत्मविश्वास भी जरूरी है। इनके बूते वे सभी परिस्थितियों का मजबूती से सामना कर पाएंगीं।'' □

भारत का चमकता सितारा

"मेरे विचार से भारत में लोग बेहद उत्साहित है क्योंकि उन्होंने अपने देश की किसी महिला को इस स्तर पर खेलते हुए कभी देखा ही नहीं था। मुझे यह जानकर सचमुच खुशी होती है कि वे मेरे प्रयासों की तारीफ कर रहे हैं.....मैं आशा करती हूं कि आज से पांच साल बाद हम भारत की कई गुना ज्यादा महिलाओं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलते हुए देखेंगे।''

– सानिया मिर्जा,
न्यूयार्क में यू एस ओपन
खेलने के बाद

जुगी जैकब © पी.पी. डब्ल्यू.डब्ल्यू.